HARYANA'S BIGGEST THEATRE GROUP

KALA MANCH

कैमलूप्स की मछलियां

लेखक के बारे में

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. आत्मजीत भारतीय नाट्य जगत के ऐसे जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं जिनकी उपलब्धियों पर गर्व किया जा सकता है। आधुनिक पंजाबी रंगमंच में आत्मजीत का नाम अग्रणी है। गत 25 वर्षों में उनके द्वारा लिखित व निर्देशित नाटक सार्थक चर्चा के केन्द्र में रहे हैं , विशेषकर ' कैमलूप्स दियां मच्छियां ' एवं ' मैं तां इक सारंगी हां ' । विषयों की भिन्नता और प्रस्तुति का अनूठापन उनके नाटकों की विशेषता है। इसलिए वे पंजाबी में एक प्रयोगवादी नाटककार के रूप में जाने जाते हैं।

मूलतः पंजाबी के लेखक होने के बावजूद उनके नाटकों का मंचन पूरे भारत में होता रहता है। अब तो स्थिति यह है कि उनकी कीर्ति राष्ट्रीय सीमाओं का अतिक्रमण कर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंच गई है। अमेरिका तथा कनाडा के कई शहरों में उन के नाटकों का मंचन इस बात की गवाही देता है कि आत्मजीत भारतीय रंगकर्म के अघोषित राजदूत हैं।

उनकी इस ख्याति के मूल में उनकी दृष्टि - संपन्नता तथा बौद्धिक प्रखरता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। अपने समय के तमाम अंतर्विरोधों तथा विसंगतियों को उजागर करने का उनका साहस तथा सामाजिक सरोकारों को उच्च स्तरीय कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करने की सामर्थ्य ने , उन्हें ऐसी विशिष्टता प्रदान की है जो उन्हें अपने समकालीन रचनाकारों से अलग करती हैं। नारी विमर्श से लेकर विस्थापन तथा अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद तक जितने भी संकट हो सकते हैं , उन सब से उलझते हुए आत्मजीत ने मानव - मूल्यों की संतुलित जीवन - दृष्टि से आप्लावित उदारवादी , विश्वसनीय तथा पारदर्शी मंच खड़ा करने में सफलता हासिल की है। उनके नाटक ' लोकल ' से प्रारंभ होकर ' ग्लोबल ' तक पहुंचते हैं तथा उनके नाटकों के पात्र हमारे जीवन का अटूट हिस्सा बनकर हमारे साथ रहते हैं। नाटककार की इस विलक्षण प्रतिभा के मूल में भरत मुनि की शास्त्रीयता , लोक की सहजता तथा आधुनिक जीवन की जटिलता अपनी संपूर्णता के साथ विद्यमान हैं।

आत्मजीत ने भारतीय नाट्य लेखन में इतिहास , मिथ तथा मिथकीय अवधारणाओं को नये सिरे से व्याख्यायित तथा रूपायित करके , विशेष उपलब्धि प्राप्त की हैं। उनके नाटकों का यह इतिहास - बोध दर्शकों के सामने एक साथ कई युगों का दिग्दर्शन ही नहीं करवाता अपितु अतीत को वर्तमान से जोड़ने का सार्थक सेतु भी तैयार करता है।

भारतीय साहित्य कला परिषद , गुरु नानक देव विश्वविद्यालय , पंजाबी साहित्य अकादमी , पंजाब साहित्य अकादमी और कई विदेशी संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत आत्मजीत को पंजाबी साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा दशक के सर्वोत्तम नाटककार का सम्मान भी दिया गया है। हिंदी में वे पहली बार इस नाटक के माध्यम से आए हैं।

नाटक के बारे में

'कैम्लूप्स की मछलियां' में नाटककार आत्मजीत ने लौटती हुई मछलियों के सशक्त रूपक द्वारा अपने पात्रों के बाहरी तथा आंतरिक द्वंद्व को अभिव्यक्त किया है। यह द्वंद्व उस प्रयत्न का परिणाम है जो वह इस बात में सामंजस्य बिठाए जाने के लिए करते हैं कि वे क्या हैं और जिस संसार में वे आए हैं, वह कैसा है? अधिकतर दृश्य चरित्र - चित्रण और संवादों की दृष्टि से यथार्थवादी हैं परंतु हमें यह सोच कर भ्रमित नहीं होना चाहिए कि यह एक प्राकृतिवादी नाटक है। नाटक के समूहगान दृश्य अंतराल में पुल की भूमिका निभाते हैं , बहुत से एकालाप सीधे दर्शकों से मुखातिब हैं , एक परिकल्पनात्मक दृश्य में तितली के माध्यम से सुखद और साधारन अतीत का प्रतीक रचा गया है जहां उम्र और यौवन समय के पार निकल जाते हैं। सब कुछ नाटक की नाटकीयता और नाटककार द्वारा रूप और शैली व सुखांत तथा दुखांत के साथ खेलने की कलात्मकता की ओर इंगित करता है।

'कैमलूप्स की मछलियां' एक संयुक्त पंजाबी परिवार और उनके मित्रों के जीवन की बात करता है। बेशक नाटक के पात्रों को दरपेश चुनौतियां विशेषतः उनकी ही है , लेकिन नाटक की शक्ति इस बात में है कि वो हमें अपने आप से बाहर निकालकर सोचने और महसूस करने के लिए प्रेरित करता है। यह पात्र अपने बुजुर्ग हो रहे माता - पिता के बुढ़ापे , बच्चों के परंपरा और अधिकार के लिए प्रतिशोध , वह सब कुछ जिसे हम दुराचार समझते हैं ,अकेलेपन और अपराध बोध को औषधि समझने की लत , धर्म को बहु - आयामी समस्याओं का एक - आयामी उपचार समझने से होने वाली आध्यात्मिक क्षति जैसी समस्याओं के साथ संघर्ष करते हैं। हमारी कोई भी नस्ल क्यों न हो , हम उनमें से अपने आप को पहचानते हैं। बेशक नाटक के पात्र अपनी समस्याओं को सुलझाने में विफल रहते हैं पर इसमें एक सूक्ष्म संकेत है कि जीवन की अधिक विश्वसनीय नींव हमारी संस्कृति में है जो कि धर्म से कहीं ज्यादा सहनशील होती है और कहीं कम बांटने वाली।

निर्देशक के बारे में

अभिनेता, निर्देशक, प्रशिक्षक और मार्गदर्शक रवि मोहन रंगमंच और मीडिया के साथ पिछले लगभग २५ वर्षों से जुड़े हैं। २००२ मे इन्होंने अपने पिता श्री रास बिहारी जी के साथ अपना सांस्कृतिक दल रास कला मंच, सफीदों के नाम से आरंभ किया और युवा निर्देशक के रूप में पूरे देश भर में अपनी पहचान बनाई। रवि मोहन ने अभी तक ३६ नाटको का निर्देशन और १५ नाटको में मुख्य अभिनेता के तौर पर अभिनय किया है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से इतिहास विषय मे लघू शोध करने के बावजूद इनका रंगमंच में व्यवसायिक रूप से आने का पूरा श्रेय ये श्रीमति डॉली अहलूवालिया तिवारी व श्री कमल तिवारी जी को देते है और ये अपने आपको उनका ऋणी मानते है जिनकी वजह से इन्होने अपनी रंग-शिक्षा संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली व राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली के द्वारा आयोजित नाट्य कार्यशालाओं मे ली व वरिष्ठ रंग-शिक्षको से इन्हे रंगमंच की बारीकियों को सीखने का मौका मिला। इन्हें संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार से २ वर्षों के लिए जूनियर फेल्लौशिप प्राप्त है।

अपने रंगमंचीय सफर में इन्होने टॉम अल्टर, निरंजन गोस्वामी, कमल तिवारी, डॉली अहलूवालिया तिवारी, राजिन्द्र गुप्ता, जयदेव तनेजा, विनोद नागपाल व अन्य कई प्रतिष्ठित हस्तियों के साथ भी कार्य किया है। इसके अतिरिक्त इन्होने टी.वी. सीरियल्स एक और काहानी (डी डी १), सबरंग (डी डी हिसार), क्राइम पेत्रोल (सोनी टी वी), जिंदगी के क्रोसरोड्स (सोनी टी वी) और ब्रॉडलेन ऐरोप्लेन (Short Film) में भी काम किया है। रंग निर्देशक के रूप में इन्होने कई नाटकों का निर्देशन किया है जिनमे प्रमुख हैं नागमंडल, दूसरा आदमी दूसरी औरत, अंधा युग, अक्स तमाशा, मैं कहानी हूँ, चंदू भाई नाटक करते हैं, मारिया फरार, गूंगी चीखें, संक्रमण से वायरस तक, आषाढ़ का एक दिन, घासीराम कोतवाल, रेज़ांग ला, जीवन का रंगमंच, हीर रांझा, नाचनी, मिस्सू चन्नी, कुरुक्षेत्र गाथा, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, चेखव की दुनिया, कैमलूप्स की मछलियां, बलि और शंभू इत्यादि। इनके द्वारा निर्देशित किए गए नाटक मैकबेथ और कुरुक्षेत्र गाथा का मंचन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हुआ है। इन्होने अलग-अलग जगह पर रंगमंच की कार्यशालाओं का भी आयोजन किया है जिसमे कई युवा कलाकारों ने इनसे अभिनय के गुण सीखे।

इन्होंने भारत देश मे आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नाट्य समारोह मे कई नाटको की प्रस्तुतियां की है। इन्हे अपने नाटको के लिए कई रंग पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनके द्वारा निर्देशित नाटक नागमंडल ने सन् २००७ मे पुणे मे आयोजित राष्ट्रीय युवा महोत्सव में स्वर्ण पदक जीता है।

रास कला मंच के बारे में

रास कला मंच सफीदों की स्थापना इसके संस्थापक कला प्रेमी व समाज सेवी श्री रास बिहारी ने हरियाणा में स्थित जीन्द जिले के एक छोटे से कस्बे सफीदों में की। यह नाट्य संस्था नौजवान और प्रखर रंगकर्मी रवि मोहन और मनीष जोशी की मेहनत व चेष्टाओं से आगे बढ़ी। रास कला मंच हरियाणा व देशभर मे सन 2004 से रंगकर्म के क्षेत्र में वीरता और धीरतापूर्वक संवहन कर रही है। सन 2015 में मनीष जोशी 'रास कला मंच' से अलग हुए और अपनी अलग नाट्य संस्था बनाई। इसके पश्चात रंगगुरु रवि मोहन ने स्वयं रास कला मंच का कार्यभार पूर्णरूप से संभाला। इनके नेतृत्व में नाट्य दल ने कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय नाट्य महोत्सवों में सफल भागीदारी निभाई है। संस्था द्वारा दूसरा आदमी दूसरी औरत, हम तो ऐसे ही है, मैं कहानी हूँ, लख्मीगाथा, जब मैं सिर्फ एक औरत होती हूँ, चंदु भाई नाटक करते हैं, परसाई की चौपाल, कहन कहानी कहन, नागमंडल, कुरुक्षेत्र गाथा, मारिया फरार, तीन खामोश औरतें, संक्रमण से वायरस तक, रेजांग ला, कैमलूप्स की मछलियां, चेखव की दुनिया, बलि और शंभू आदि नाटकों की सफल प्रस्तुतियाँ की गई हैं। रास कला मंच हरियाणा की लोक नाट्य शैली पर भी काम करती आई है। संस्था ने कई चर्चित सांस्कृतिक संस्थानो जैसे : राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली, संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली, एन॰ जेड॰ सी॰ सी॰ पटियाला, डब्ल्यू॰ जेड॰ सी॰ सी॰ उदयपुर, एन॰ सी॰ जेड॰ सी॰ सी॰ प्रयागराज, चुनाव आयोग भारत सरकार, हरियाणा कला परिषद चंडीगढ़, मल्टी आर्ट कल्चरल सेंटर कुरुक्षेत्र, सूचना जनसम्पर्क एवं सांस्कृतिक मामले चंडीगढ़, कला एवं सांस्कृतिक विभाग, हरियाणा सरकार, चंडीगढ़ संगीत नाटक अकादमी चंडीगढ़, कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड कुरुक्षेत्र आदि के साथ भी कार्य किया है।

पात्र परिचय

मंच पर

कलाकार का नाम	चरित्र
हरजिंदर सिंह / हैरी	गौरव सक्सेना
बरजींदर सिंह	सत्यम कुशवाहा
सुरजीत सिंह	विकास दिवान
जोगिंदर सिंह / जैग	अंकित चौधरी
करनैल सिंह / कैली	पवन भारती
भईया	रुपेश नंदन
बिंदर कौर	संजना लूथरा
रबी (रब्बी)	अर्जुन चौधरी
बिल्लू / बिल	विवेक मिश्रा
मनदीप / मैंडी	शिवानी दुबे
काका	रोहित
राठी मिक्की	श्वेता कुमारी

मंच परे

कलाकार का नाम	चरित्र
मंच निर्माण	दीपक शर्मा
प्रकाश व्यवस्था	धंजित ककोटी
संगीत संचालन	आशुतोष चौबे
वस्त्र विन्यास	योगिता शर्मा
रूपसज्जा	राजन शीला
कहानीकार	डॉ॰ आत्मजीत
संगीत परिकल्पना	मनन भारद्वाज
मंच सहायक	शोमित राज
निर्देशक	रवि मोहन

प्रस्तुति : रास कला मंच, सफीदों
वार्ड न. ९, नजदीक जेसीज भवन, सम्राट कॉलोनी,
सफीदों-१२६११२
संपर्क सूत्र- 9215512300
ई-मेल –raskalamanch@gmail.com
वेबसाइट-www.raskalamanch.com